'तिलहन में आत्मनिर्भरता जरूरी'

अमर उजाला ब्यूरो

भरतपुर। सरसों अनुसंधान निदेशालय का 20वां स्थापना दिवस समारोह रविवार को मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारत सरकार के कृषि आयुक्त डॉ. जेएस संधू ने कहा कि भारतीय कृषि ने पिछले 50-60 वर्ष में शानदार उपलब्धि हासिल कर खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाया है।

उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिक और किसानों के संयुक्त प्रयास का नतीजा है कि आज देश विभिन्न क्षेत्रों में तरक्की कर रहा है। हमें तिलहन और दलहन के क्षेत्र में भी आत्मनिर्भरता बनाए रखने के लिए कार्य करना होगा। उन्होंने वैज्ञानिक, अधिकारी और किसानों से अपील की कि वे सामूहिक प्रयास कर देश को खुशहाली के मार्ग पर लाने की दिशा में कार्य करें। उन्होंने कहा कि वर्तमान में प्रसार की महती आवश्यकता है।

समारोह की अध्यक्षता करते भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के सहायक महानिदेशक डॉ. बीबी सिंह ने कहा कि राई सरसों फसल का भारतीय आर्थिक व्यवस्था में विशेष स्थान है। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक अनुसंधान के महत्वपूर्ण कार्य में लगे हैं और इसके अच्छे परिणाम सामने आने लगे हैं। इस अवसर पर परिषद के सहायक निदेशक डॉ. एन गोपाल कृष्णन ने कहा कि निष्ठा ईमानदारी से वैज्ञानिक, अधिकारी और कर्मचारियों को कार्य करना होगा। निदेशालय के निदेशक डॉ. धीरज सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया और निदेशालय स्थापना से लेकर अब तक की प्रगति के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम के दौरान सरसों अनुसंधान निदेशालय के चार प्रकाशनों का विमोचन भी किया गया और विभिन्न क्षेत्रों में अच्छा कार्य करने वाले वैज्ञानिकों को पुरस्कृत किया गया। जिनमें डॉ. पीडी मीणा, उदय सिंह राणा, राकेश गोयल, मुकेश कुमार, तारासिंह मुख्य रहे। संचालन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अशोक कुमार शर्मा और डॉ. लिजो थोमस ने किया।

स्थापना दिवस कार्यक्रम का शुभारंभ करते अतिथि।

अमर उजाला 21 अक्टूबर 2013

सरसों अनुसंधान निदेशालय का 20 वां स्थापना दिवस

'तिलहनों में भी आत्म निर्भरता की जरूरत'

भरतपुर

alwar@patrika.com

भारतीय कृषि ने पिछले 50-60 वर्ष में अच्छी उपलब्धि हासिल की है। 1950 में खाद्यान्न उत्पादन 50 मिलियन टन था, वह 2011-12 में बढ़कर 259 मिलियन टन हो गया। यह वैज्ञानिकों, नीति निर्माताओं व किसानों के संयुक्त प्रयासों का नतीजा है, लेकिन अभी देश को ऐसी ही आत्मनिर्भरता तिलहन एवं दलहन में प्राप्त करनी होगी और इसके लिए सभी को मिलकर प्रयास करने होंगे।

यह बात भारत सरकार के कृषि आयुक्त डॉ. जे. एस. सन्धु ने सेवर स्थित सरसों अनुसंधान निदेशालय के 20 वें स्थापना दिवस समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक तकनीकों को एकीकृत रूप में किसानों के खेत पर प्रदर्शित करना चाहिए ताकि किसान इन्हें देखकर भरोसा कर सके और नई तकनीक को प्रयोग में ला सके। उन्होंने कहा कि राई सरसों की फसल वर्षा आधारित होने के कारण जल संरक्षण तकनीकों का विकास व उनका किसानों में प्रसार वर्तमान की आवश्यकता है।

समारोह के अध्यक्ष भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (दलहन एवं तिलहन) डॉ. बी. बी. सिंह ने कहा कि वर्तमान परिस्थिति में फसल सुधार के अनुसंधान कार्यक्रम, अधिकतम उपज की किस्मों व तकनीकों को चयनित गांवों में सघनता से ग्राहता बढ़ाने व गैर परम्परागत क्षेत्रों में राई-सरसों फसल को बढ़ावा देने की जरूरत है। विशिष्ट अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेषक (सी.सी) डॉ. एन. गोपाल कृष्णन ने कहा कि वर्तमान परिपेक्ष्य में और अधिक किसान मित्रवत प्रसार कार्यक्रमों को अभियान के रूप में चलाने की आवष्यकता है। सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. धीरज सिंह ने निदेशालय की स्थापना का मिशन राई सरसों की उत्पादकता बढ़ाना, तेल की गुणवत्ता और किसानों की आजीविका में सुधार करना तथा विभिन्न हितकारकों को ज्ञान आधारित संसाधन प्रबंधन प्रौद्योगिकी प्रदान करना है। उन्होंने उपलब्धियों की जानकारी भी दी। उन्होंने कहा कि राई सरसों की खेती में नवीनतम तकनीकों का प्रयोग करते हुए इसकी उत्पादकता को बढ़ाना होगा।

भरतपुर के सरसों अनुसंधान निदेशालय में कर्मचारी को सम्मानित करते अतिथि।

इस मौके पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के 4 प्रकाशनों निदेशालय की 20 वर्षों की उपलब्धियां, सिद्धार्थः सरसों संदेश, सरसों न्यूज एवं तारामीरा की वैज्ञानिक खेती का भी विमोचन किया गया। समारोह में वर्ष 2012-13 में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए विभिन्न पुरस्कार प्रदान किए। इनमें निदेशालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. पी.डी. मीणा को उत्कृष्ट वैज्ञानिक का पुरस्कार प्रदान किया। उदय सिंह राना, राकेश गोयल, मुकेश कुमार व तारासिंह को पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय राई-सरसों समन्वित अनुसंधान परियोजना के विभिन्न केन्द्रों के वैज्ञानिकों, अनुसंधान केन्द्र छलेसर के प्रभारी डॉ. एस.के. दुबे, कृषि विभाग के उपनिदेषक देशराज सिंह, आत्मा के परियोजना निदेशक योगेश शर्मा, कृशि विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर के प्रभारी डॉ. अमर सिंह, कृशि अनुसंधान उप केन्द्र के प्रभारी डॉ. उदयभान सिंह, निजी कम्पनियों के प्रतिनिधि एवं प्रगतिशील किसान भी उपस्थित थे। संचालन वैज्ञानिक डॉ. लिजो थोमस ने किया।

राजस्थान पत्रिका
21 अक्टूबर 2013

कार्यक्रम | सरसों अनुसंधान निदेशालय का 20वां स्थापना दिवस

'तकनीकों का विकास जरूरी'

भरतपुर. सरसों अनुसंधान निदेशालय में स्थापना दिवस के मौके पर पुस्तक का विमोचन करते अतिथि।

भास्कर न्यूज • भरतपुर

कृषि आयुक्त डॉ. जेएस संधु ने कहा कि सभी वैज्ञानिक तकनीकों को एकीकृत रूप में किसानों के खेत पर प्रदर्शित करना चाहिए, ताकि किसान देखकर विश्वास करने की उक्ति के अनुसार तकनीकों के उपज प्रभाव का स्वयं आंकलन करके उन्हें अपनाने के लिए प्रेरित हो सकें।

वे रविवार को सरसों अनुसंधान सरसों अनुसंधान निदेशालय के स्थापना दिवस पर हुए कार्यक्रम में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि राई-सरसों की फसल वर्षा आधारित होने के कारण जल संरक्षण तकनीकों का विकास व जल संरक्षण तकनीकों का विकास के साथ प्रसार भी आवश्यक है। इस प्रक्रिया को कई क्षेत्रों में फैलाने की आवश्यकता है। अध्यक्षता करते हुए भारतीय कृषि कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के सहायक महानिदेशक (दलहन एवं तिलहन) डॉ. बीबी सिंह ने कहा कि राई-सरसों फसल का भारतीय आर्थिक व्यवस्था में एक विशेष स्थान है। किस्मों एवं तकनीकों के विकास के साथ-साथ निदेशालय ने उनका प्रसार एवं उन्हें किसानों तक पहुंचाने के लिए भी उल्लेखनीय कार्य किया है। वैज्ञानिक अनुसंधान का कार्य महत्वपूर्ण है।

अनुसंधान की उपलब्धियों से व्यक्ति को सभी हित धारकों में पहचान मिलती है। वर्तमान परिस्थिति में फसल सुधार के अनुसंधान कार्यक्रम, अधिकतम उपज की किस्मों एवं तकनीकों को चयनित गांवों में सघनता से ग्राहता बढाने एवं गैर परंपरागत क्षेत्रों में राई-सरसों फसल को बढावा देने की आवश्यकता है। सहायक महानिदेशक (सीसी) डॉ. एन गोपाल कृष्णन ने कहा कि निष्ठा एवं ईमानदारी से सभी वैज्ञानिक, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपना कार्य करना चाहिए। निदेशक डॉ. धीरजसिंह ने निदेशालय की उपलब्धियों व कार्यक्रमों की जानकारी दी।

कार्यक्रम में सरसों अनुसंधान निदेशालय के चार प्रकाशनों सरसों संदेश, सरसों न्यूज़ एवं, तारामीरा की वैज्ञानिक खेती व सरसों अनुसंधान निदेशालय की उपलब्धियों का विमोचन किया गया।

उत्कृष्ट कार्य करने वालों को किया सम्मानित

कार्यक्रम में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. पीडी मीणा को उत्कृष्ट वैज्ञानिक, उदयसिंह राना एवं राकेश गोयल को उत्कृष्ट तकनीकी अधिकारी/सहायक, मुकेश कुमार को उत्कृष्ट प्रशासनिक कर्मचारी एवं तारा सिंह को उत्कृष्ट कुशल सहायक कर्मचारी का पुरस्कार प्रदान किया गया। कार्यक्रम में अनुसंधान केंद्र छलेसर के प्रभारी डॉ. एसके दुबे, कृषि विभाग के उपनिदेशक देशराजसिंह, आत्मा के परियोजना निदेशक योगेश शर्मा, कृषि विज्ञान केंद्र कुम्हेर के प्रभारी डॉ. अमरसिंह एवं कृषि अनुसंधान उप केंद्र के प्रभारी डॉ. उदयभानसिंह आदि उपस्थित रहे। संचालन डॉ. लिजो थोमस ने किया।

दैनिक भास्कर 21 अक्टूबर 2013

सरसों अनुसंधान निदेशालय के स्थापना दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

तिलहन में भी आत्मनिर्भरता जरूरी

भरतपुर, (देवेन्द्र सिंह): भारत सरकार के कृषि आयुक्त डॉ. जेएस संधु ने कहा कि अभी देश को खाद्यानों में ही आत्मनिर्भरता प्राप्त हुई है वैसी ही आत्म निर्भरता तिलहन और दलहन में भी प्राप्त करनी होगी तभी हम खाद्य सुरक्षा के साथ-साथ पोषण सुरक्षा का लक्ष्य भी प्राप्त कर सकेंगे। वह रविवार को सरसों अनुसंधान निदेशालय के 20वें स्थापना दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में वैज्ञानिकों, अधिकारियों और किसानों को सम्बोधित कर रहे थे।

सरसों अनुसंधान निदेशालय के 20वें स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान निदेशालय के प्रकाशनों का विमोचन करते अतिथिगण एवं उत्कृष्ट कार्य के लिये निदेशालय के एक कर्मी को सम्मानित करते हुए।

उन्होंने कहा कि भारतीय कृषि ने पिछले 50-60 वर्षो में शानदार उपलब्धि हांसिल की है। 1950 में जो खाद्यान उत्पादन 50 मिलियन टन था वह 2011 में बढ़कर 259 मिलियन टन हो गया जो कि हमारे वैज्ञानिक नीति निर्माताओं एवं किसानों के संयुक्त प्रयासों का नतीजा है। उन्होंने कहा कि सभी वैज्ञानिक तकनीकों को स्वीकृत रूप से किसानों के खेत पर प्रदर्शित करना चाहिए ताकि किसान देखकर विश्वास करने की उक्ति के अनुसार तकनीकों के उपज प्रभार का स्वयं आंकलन करके उन्हें अपनाने के लिये प्रेरित हो सकें। डॉ.संधु ने कहा कहा कि राई-सरसों की फसल वर्षा आधारित होने के कारण जल संरक्षण तकनीकों का विकास एवं उनका किसानों में प्रसार वर्तमान की आवश्यकता है। इस अवसर पर समारोह की अध्यक्षता कर रहे भारतीय कृषि वैज्ञानिक अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक डॉ.वीपी सिंह ने कहा कि राई-सरसों फसल का भारतीय आर्थिक व्यवस्था में विशेष महत्व है। निदेशालय द्वारा किए गए अनुसंधान कार्यो एवं प्रगति पर उन्होंने प्रशंसा व्यक्त करते हुए कहा कि किस्मों एवं तकनीकों के विकास के साथ-साथ इन निदेशालय में उनका प्रसार एवं उन्हें किसानों तक पहुंचाने के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है।

वहीं कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक डॉ.एस गोपालकृष्णन ने कहा कि निष्ठा एवं ईमानदारी से सभी वैज्ञानिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपना कार्य करना चाहिये। उन्होंने इस मौके पर निदेशालय को परिषद की ओर से हरसंभव सहायता दिलवाने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम के प्रारंभ में सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ.धीरज सिंह ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि निदेशालय की स्थापना का मिशन राई-सरसों की उत्पादकता बढ़ाना, तेल की गुणवत्ता और किसानों की आजीविका में सुधार करना तथा विभिन्न हितकारकों को ज्ञान आधारित संसाधन, प्रबंधन प्रौद्योगिकी प्रदान करना है। उन्होंने विगत 20 वर्षो में निदेशालय की उपलब्धियों एवं कार्यक्रमों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर अतिथियों ने निदेशालय के चार प्रकाशनों, निदेशालय की 20 वर्षो की उपलब्धियां, सिद्धार्थ, सरसों संदेश, सरसों न्यूज एवं तारामीरा की वैज्ञानिक खेती का भी विमोचन किया। कार्यक्रम के दौरान वर्ष 2012-13 में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए निदेशालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.पीडी मीणा उदयसिंह राना, राकेश गोयल, मुकेश कुमार, तारा सिंह को पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर अखिल भारतीय राई-सरसों समन्वित अनुसाधन परियोजना के विभिन्न केन्द्रों के वैज्ञानिकों सहित बड़ी संख्या में क्षेत्र के किसान मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ.लिजो थॉमस ने किया।

पंजाब केसरी 21 अक्टूबर 2013

सरसों अनुसंधान निदेशालय के स्थापना दिवस पर निदेशालय के प्रकाशनों का विमोचन करते अतिथिएवं उत्कृष्ट कार्य के लिए निदेशालय के एक कर्मी को सम्मानित करते हुए।

तिलहनों में भी आत्मनिर्भरता प्राप्त करना जरूरी : डॉ. संधु

स्थापना दिवस पर हुआ कार्यक्रम

न्यूज सर्विस

भरतपुर, 20 अक्टूबर। भारत सरकार के कृषि आयुक्त डॉ. जे.एस.संधु ने कहा कि अभी देश को खाद्यानों में ही आत्मनिर्भरता प्राप्त हुई है वैसी ही आत्म निर्भरता तिलहन और दलहन में भी प्राप्त करनी होगी तभी हम खाद्य सुरक्षा के साथ-साथ पोषण सुरक्षा का लक्ष्य भी प्राप्त कर सकेंगे। वह रविवार को सरसों अनुसंधान निदेशालय के 20वें स्थापना दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में वैज्ञानिकों, अधिकारियों और किसानों को सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि भारतीय कृषि ने पिछले 50-60 वर्षो में शानदार उपलब्धि हासिल की है। 1950 में जो खाद्यान उत्पादन 50 मिलियन टन था वह 2011 में बढकर 259 मिलियन टन हो गया जो कि हमारे वैज्ञानिक नीति निर्माताओं एवं किसानों के संयुक्त प्रयासों का नतीजा है। उन्होंने कहा कि सभी वैज्ञानिक तकनीकों को स्वीकृत रूप से किसानों के खेत पर प्रदर्शित करना चाहिये ताकि किसान देखकर विश्वास करने की उक्ति के अनुसार तकनीकों के उपज प्रभार का स्वयं आंकलन करके उन्हें अपनाने के लिये प्रेरित हो सकें। डॉ. संधु ने कहा कहा कि राई-सरसों की फसल वर्षा आधारित होने के कारण जल संरक्षण तकनीकों का विकास एवं उनका किसानों में प्रसार वर्तमान की आवश्यकता है। इस अवसर पर समारोह की अध्यक्षता कर रहे भारतीय कृषि वैज्ञानिक अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक डॉ. वी.पी.सिंह ने कहा कि राई-सरसों फसल का भारतीय आर्थिक व्यवस्था में विशेष महत्व है। निदेशालय द्वारा किए गए अनुसंधान कार्यो एवं प्रगति पर उन्होंने प्रशंसा व्यक्त करते हुए कहा कि किस्मों एवं तकनीकों के विकास के साथ-साथ इन निदेशालय में उनका प्रसार एवं उन्हें किसानों तक पहुंचाने के लिये उल्लेखनीय कार्य किया है। वहीं कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक डॉ. एस.गोपालकृष्णन ने कहा कि निष्ठा एवं ईमानदारी से सभी वैज्ञानिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपना कार्य करना चाहिए। उन्होंने इस मौके पर निदेशालय को परिषद की ओर से हरसंभव सहायता दिलवाने का आश्वासन दिया।

भरतपुर

कार्यक्रम के प्रारंभ में सरसों अनुसंधान निदेशालय के [illegible] डॉ. धीरज सिंह ने अतिथियों का [illegible] करते हुये कहा कि निदेशालय का [illegible]पना का मिशन राई-सरसों की [illegible]कता बढाना, तेल की गुणवत्ता और किसानों की आजीविका में सुधार करना तथा विभिन्न हितकारकों को ज्ञान आधारित संसाधन, प्रबंधन प्रौद्योगिकी प्रदान करना है। उन्होंने विगत 20 वर्षो में निदेशालय की उपलब्धियों एवं कार्यक्रमों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर अतिथियों ने निदेशालय के चार प्रकाशनों, निदेशालय की 20 वर्षो की उपलब्धियां, सिद्धार्थ, सरसों संदेश, सरसों न्यूज एवं तारामीरा की वैज्ञानिक खेती का भी विमोचन किया।

कार्यक्रम के दौरान वर्ष 2012-13 में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु निदेशालय के वरिष्ठं वैज्ञानिक डॉ. पी.डी.मीणा उदयसिंह राना, राकेश गोयल, मुकेश कुमार, तारा सिंह को पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर अखिल भारतीय राई-सरसों समन्वित अनुंसाधन परियोजना के विभिन्न केन्द्रों के वैज्ञानिकों सहित बडी संख्या में क्षेत्र के किसान मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. लिजो थॉमस ने किया।

दैनिक नवज्योति 21 अक्टूबर 2013

देश को खाद्यान्नों में ही आत्मनिर्भरता मिली है : संधु

भरतपुर 20 अक्टूबर (निस)। सरसों अनुसंधान निदेशालय का 20वां स्थापना दिवस समारोह कृषि आयुक्त डा. जेएस संधु के मुख्य आतिथ्य में आयोजित किया गया।

समारोह में संधु ने कहा कि देश को खाद्यान्नों में ही आत्मनिर्भरता मिली है। वैज्ञानिक किसान आदि सभी को सुरक्षा का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सामूहिक प्रयास करने पड़ेंगे। उन्होंने कहा कि राई, सरसों की फसल वर्षा आधारित होने के कारण जल संरक्षण तकनीकों का विकास एवं उनका किसानों में प्रसार की आवश्यकता है।

- सरसों अनुसंधान निदेशालय का 20वां स्थापना दिवस समारोह मनाया
- 'राई सरसों की खेती में नवीनतम तकनीकों का प्रयोग करते हुए इसकी उत्पादकता को बढ़ाना होगा'

इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद दिल्ली के सहायक महानिदेशक ने कहा कि वैज्ञानिक अनुसंधान का कार्य महत्वपूर्ण है। अनुसंधान की उपलब्धियों से कार्यों में पहचान बनती है। सहायक महानिदेशक डा. एन गोपालकृष्णन ने कहा कि निदेशालय में उन्नत तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने के लिए प्रचार प्रसार किया है।

इस अवसर पर निदेशालय के निदेशक डा. धीरजसिंह ने कहा कि राई सरसोंकी खेती में नवीनतम तकनीकों का प्रयोग करते हुए इसकी उत्पादकता को बढ़ाना होगा। इस अवसर पर निदेशालय की 20 वर्षों की उपलब्धियां, सिद्धार्थ, सरसों संदेश, सरसों न्यूज और तारामीरा की वैज्ञानिक खेती का विमोचन भी किया गया। साथ ही उत्कृष्ट कार्य करने वाले डा. पीडी मीणा को पुरुस्कृत किया गया और उदयसिंह राना, राकेश गोयल, मुकेश कुमार, तारासिंह को भी पुरुस्कार दिया गया।

कार्यक्रम में डा. एसके दुबे, देशराज सिंह, योगेश शर्मा, अमरसिंह, डा. उदयवान सिंह, डा. अशोक कुमार शर्मा मौजूद थे। संचालन वैज्ञानिक डा. लीजो थोमस ने किया।

राष्ट्रदूत 21 अक्टूबर 2013